अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वविज्ञ (वर्ष : 2023) दिनांक : 19.08.2023

समय सीमा : 3 घंटा तृतीय वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

भगवती भाष्य (खण्ड-3)–70

प्र. 1 कोई छः पारिभाषिक शब्द लिखें– 6

(क) कापासिक वस्त्र पहनने वाले को क्या कहते हैं?

(ख) विधिपूर्वक आचार का अनुशीलन करने वाला।

(ग) प्रमाण से अतिरिक्त जल और आहार का प्रयोग।

(घ) जिस व्यक्ति का बल प्रवाह रूप में अविच्छिन्न रहता है।

(ङ) जो कृत नपुंसक होता है।

(च) श्रुत के ग्रहण में विघ्न उपस्थित करना।

(छ) जिस फल में एक बीज होता है।

(ज) जीव का शरीर से मुक्त होना अथवा शरीर का जीव से मुक्त होना।

प्र. 2 कोई छः प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए– 6

(क) नो सूक्ष्म-नो बादर कौन से जीव होते हैं?

(ख) दर्शन लब्धि में कौन से जीव आते हैं?

(ग) आहारक में कितने ज्ञान की भजना है और क्यों?

(घ) प्राणातिपात आदि पांच अणुव्रतों के कुल कितने भंग होते हैं?

(ङ) तैजस शरीर और कार्मण शरीर परितप्त कैसे हो सकते हैं?

(च) आंतरिक शुद्धि के दो सूत्र लिखें।

(छ) लोक कितने प्रकार का प्रज्ञप्त है?

प्र. 3 कोई दस प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए– 30

(क) प्रयोग परिणाम और मिश्र परिणाम में क्या अंतर है?

(ख) कर्म से आशीविष से क्या तात्पर्य है और यह किस गति के जीव होते हैं?

(ग) जयाचार्य ने विकलेन्द्रिय को द्विज्ञानी किस अपेक्षा से कहा है?

(घ) मति अज्ञानी और श्रुत अज्ञानी के तीन विकल्प लिखें।

(ङ) दान के तीन रूप के यंत्र को लिखें।

(च) कर्मबंध की पांच भूमिकाओं के नाम लिखें।

(छ) पृथ्वीकायिक जीव के देशबंध का उत्कृष्ट अंतर अपेक्षा भेद से लिखें।

(ज) उच्च गोत्र बंध के हेतु लिखें।

(झ) अश्रुत्वा पुरुष के आध्यात्मिक विकास के साधन क्या हैं?

(ञ) नरकगति में जाने की शर्तों के छह विशेषणों को लिखें।

(ट) प्राचीन काल में देव पूजा और प्रकृति पूजा के अन्तर्गत किनकी पूजा की जाती थी?

(ठ) अहीव एगंतदिट्ठीए से क्या तात्पर्य है?

प्र. 4 कोई तीन प्रश्नों का उत्तर संक्षेप में दीजिए– 15

(क) वैर शब्द से क्या तात्पर्य है? तथा वैरानुबंधी वैर की अवधारणा को स्पष्ट करें।

(ख) दिशाओं का संक्षेप में वर्णन करें।

(ग) उत्पल पत्र की स्थिति का अनुबंध और काय-संबेध की दृष्टि से विवेचन करें।

(घ) आराधना के तीन प्रकारों का वर्णन करें।

प्र. 5 कर्मादान की व्याख्या करते हुए पन्द्रह कर्मादान का वर्णन करें। 13

अथवा

मोहनीय कर्म के प्रकारों व उनके हेतुओं का वर्णन करें।

झीणी चरचा-30

प्र. 6 कोई दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्ति में दें– 10

(क) केवली समुद्घात में औदारिक काययोग तथा कार्मण काययोग कौन से समय में होता है?

(ख) मुनि कितने व कौन से कारणों से आहार करता है?

(ग) एक पूर्व कितना होता है?

(घ) कवल आहार किसे कहते हैं वह कितने व कौन से दंडकों में होता है?

(ङ) सर्वव्रत सामायिक कितने भवों में कितनी बार प्राप्त हो सकती है?

(च) एक भार का तोल-माप क्या है?

(छ) शुभयोग को आश्रव और निर्जरा किस अपेक्षा से कहा जाता है?

(ज) प्रथम देवलोक के इन्द्र की कितनी अग्रमहेषियां हैं और वे विक्रिया करके कितनी हो जाती है?

(झ) त्रेसठ श्लाका पुरुष किस योनि में उत्पन्न होते हैं और वह योनि किस आकार की होती है?

(ञ) पछाकड़ श्रावक कौन होता है?

(ट) सामायिक में आभ्यंतर ममत्व का प्रत्याख्यान क्यों नहीं होता?

प्र. 7 कोई तीन पद्यों का शब्दार्थ करें– 12

(क) उपरला नै विषै अल्प छै, जाणै उपशांत वेदी।
वेद विकार विदार नै, लागी मुक्त-उमेदी।।

(ख) ते भणि ए संवृत जोन में, इम असन्नी नैं विकलेंद्री।
गर्भज पंचेंद्री बिहुं हुवै, एक जोन एकेक पंचेंद्री।।

(ग) सचित थकी नव भंग कह्या, अचित्त थकी नव तेम।
मिश्र थकी पिण भंग नव, सप्तवीस है एम।।

(घ) प्रथम एक आगल सात अंक छै, तेहिज दूजे सात।
तीजे सात पिण तेहिज मेलणा, चोथे सात पिण तेहिज मिलात रे।।

प्र. 8 मेरु-पर्वत और लवण समुन्द्र का वर्णन करें। 8

अथवा

ढाल 3 परमाणु आदि का सारांश लिखें।